भारत-ईरान संबंध: वर्तमान आर्थिक स्थितियों में चुनौतियाँ और अवसर

Dr. Rekha Rani, Bulandshahr Uttar Pradesh India, Email - rs.9897128444@gmail.com

1.0 परिचय

भारत-ईरान संबंध सदियों पुराने हैं। उन्होंने प्राचीन काल से इतिहास, आर्थिक संबंधों, द्विपक्षीय व्यापार और सांस्कृतिक संबंधों को साझा किया। हालाँकि, इस संबंध की प्रकृति आज बहुत भिन्न है क्योंकि नए कारक अपनी भूमिका निभाने के लिए उभरे हैं। ऐसा ही एक कारक अमेरिका है - दुनिया की एकमात्र महाशक्ति। ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर वाशिंगटन के संदेह का ईरान के साथ भारत के संबंधों पर सीधा प्रभाव पड़ा। ऊर्जा की कमी वाला देश होने के नाते, भारत निश्चित रूप से ईरान की ओर देखता है। दूसरी ओर, तेहरान नई दिल्ली को अपने समृद्ध ऊर्जा संसाधनों के संभावित बाजार के रूप में देखता है। अभिसरण के अन्य क्षेत्र भी हैं लेकिन भारत और ईरान दोनों इस संबंध को अपेक्षित स्तर तक विकसित नहीं कर पाए हैं। इस विफलता का मुख्य कारण उन प्रतिबंधों के कारण है जो अमेरिका ने ईरान पर अपनी मांगों के अनुपालन के लिए दबाव डालने के लिए लगाए हैं। संबंधों की प्रकृति को देखते हुए, यह पत्र भारत-ईरान संबंधों में अमेरिकी कारक की जांच करता है और यह विश्लेषण करने की कोशिश करता है कि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार इस संबंध को कैसे आगे बढ़ा रही है।

1.1 भारत-ईरान संबंध: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और वर्तमान प्रक्षेपवक्र

पूरे इतिहास में, रेशम मार्ग के माध्यम से आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ। गहरे सांस्कृतिक संबंध इस तथ्य से स्पष्ट होते हैं कि मुगल काल के दौरान भारत में आधिकारिक भाषा फारसी थी। इस ऐतिहासिक कनेक्टिविटी के परिणामस्वरूप आज भारत में लगभग 70,000 पारसी मौजूद हैं। हालाँकि, वर्तमान समय में, कई कारक भारत और ईरान के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों पर हावी हैं। पहला कारक भारत में मुस्लिम आबादी है, विशेष रूप से शिया मुसलमान। दूसरा कारक अफगानिस्तान की स्थिति है। तीसरा कारक ईरान के समृद्ध ऊर्जा संसाधन और भारत की बढ़ती ऊर्जा जरूरतें हैं। भारत के लिए ईरान के महत्व को बढ़ाने वाला एक अन्य कारक इसकी भौगोलिक स्थिति है क्योंकि यह मध्य एशिया और कैस्पियन क्षेत्र को जोड़ता है। ये दोनों क्षेत्र ऊर्जा से भरपूर हैं और इन दोनों क्षेत्रों में चीन की पैठ का कारण है। इस प्रकार, भारत इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का इच्छुक है।

ऊर्जा सुरक्षा के संबंध में, विश्व शक्ति के रूप में पहचाने जाने की भारतीय आकांक्षाओं के लिए इसे स्थिर आर्थिक विकास बनाए रखने की आवश्यकता है। और, उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, दुनिया के चौथे सबसे बड़े ऊर्जा खपत वाले देश भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह ऊर्जा संसाधनों की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करे। इसलिए, ऊर्जा सुरक्षा भारत के लिए एक प्रमुख विदेश नीति विचार बन गई है। इसके अतिरिक्त, बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण भारत की ऊर्जा आवश्यकताएँ भी बढ़ रही हैं।

हाल के अनुमानों के अनुसार, संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत और मैक्सिको जैसे अन्य देशों से तेल आयात भारत के कुल आयात का 80 प्रतिशत है। हाल ही में, इराक और सऊदी अरब भारत के सबसे बड़े तेल आपूर्तिकर्ता बन गए हैं। दूसरी ओर, दुनिया भर में स्वच्छ पर्यावरण के प्रयासों ने भी भारत को कोयले के बजाय ऊर्जा के स्वच्छ स्रोतों की तलाश करने के लिए मजबूर किया है। इसलिए, ईरान - अनुमानित 137.6 बिलियन बैरल तेल भंडार और 1,046 क्यूबिक फीट प्राकृतिक गैस के अपने समृद्ध ऊर्जा संसाधनों के साथ - इसे दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा कच्चा तेल भंडार और दूसरा सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस भंडार वाला देश और दुनिया का छठा सबसे बड़ा देश बनाता है। तेल निर्यातक - भारत के लिए एक स्वाभाविक पसंद है।

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, भारत और ईरान के बीच संबंध मजबूत स्तर पर थे। यह स्थिति जल्द ही बदल गई क्योंकि शीत युद्ध के दौरान दोनों देशों ने खुद को दो अलग-अलग गुटों में पाया। शाह पहलवी के अधीन ईरानी सरकार ने पश्चिमी ब्लॉक का हिस्सा बनना चुना, जबकि प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के अधीन भारत ने पहले 'गुटनिरपेक्षता' की नीति का पालन किया और फिर सोवियत ब्लॉक की ओर झुकना शुरू कर दिया। हालाँकि, दो अलग-अलग खेमों में रहने के बावजूद, दोनों देश सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने में कामयाब रहे। यहां तक कि जब भारत 1965 और 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध में गया, तब भी स्थिति स्थिर बनी रही। ईरानी क्रांति के बाद, भारत-ईरान संबंधों में और सुधार की उम्मीद थी। हालाँकि, इस

क्षेत्र में कुछ विकास, उदाहरण के लिए, दिसंबर 1979 में सोवियत संघ के अफगानिस्तान पर आक्रमण ने दोनों देशों को घनिष्ठ संबंध बनाने से रोक दिया। संघर्ष के शुरुआती दिनों के दौरान, दोनों देशों ने खुद को कूटनीतिक रूप से विरोध करते हुए पाया क्योंकि ईरान ने अहमद शाह मसूद के नेतृत्व वाले उत्तरी गठबंधन के पीछे अपना समर्थन दिया, जबकि भारत ने बाबरक कर्मल की सोवियत-स्थापित सरकार का समर्थन किया।

फरवरी 1989 में सोवियत सेना के अफगानिस्तान से हटने के बाद से स्थिति फिर से बदल गई क्योंकि दोनों देशों ने तालिबान का कड़ा विरोध किया था। इसके बाद, विशेष रूप से 9/11 के बाद संबंधों में सुधार होना शुरू हुआ। दिलचस्प बात यह है कि इस विशेष समय में, भारत, ईरान और अमेरिका ने खुद को एक ही पृष्ठ पर पाया क्योंकि तीनों अफगानिस्तान में तालिबान शासन के विरोध में थे और अपनी सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए उत्सुक थे। 2003 में, ईरानी राष्ट्रपति, मोहम्मद खातमी की यात्रा भारत-ईरान संबंधों का उच्च बिंदु थी। यात्रा के दौरान, राष्ट्रपति खातमी भारत के स्वतंत्रता दिवस समारोह में विशिष्ट अतिथि थे। दोनों देश रणनीतिक साझेदारी बनाने पर सहमत हुए। यह मेल-मिलाप लंबे समय तक नहीं चला और इस बार, यह ईरान का परमाणु कार्यक्रम था जिसने उत्प्रेरक के रूप में काम किया। अमेरिका और पश्चिमी दुनिया के साथ ईरान के मतभेदों ने भी भारत को बैकफुट पर ला दिया क्योंकि उस समय तक भारत अमेरिका के करीब आ रहा था। परिणामस्वरूप, भारत ने अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स में तीन बार ईरान के खिलाफ मतदान किया।

(आईएईए)। पहला वोट 2005 में डाला गया था जिसमें ईरान को अपनी परमाणु सुरक्षा प्रतिबद्धताओं का पालन करने में विफल रहने के लिए निंदा की गई थी, 2006 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) को ईरान की डोजियर भेजने के लिए एक प्रस्ताव भी पारित किया गया था। तीसरा वोट 2009 में आया जब एक IAEA प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें ईरान को क़ोम में यूरेनियम संवर्धन संयंत्र के निर्माण को रोकने के लिए कहा गया। इसलिए, रणनीतिक साझेदारी बनाने का सपना अधूरा रह गया। हालाँकि, संबंधों में इन बाधाओं के बावजूद, ईरान और भारत दोनों ने अपने व्यापारिक और आर्थिक संबंध जारी रखे और प्रतिबंधों के बावजूद भारत ने ईरान से तेल का आयात जारी रखा। यूरोपीय कंपनियों द्वारा ईरान से तेल ले जाने वाले टैंकरों को बीमा प्रदान करने से इनकार करने के बाद, भारत सरकार ईरान के साथ व्यापार फिर से शुरू करने के लिए राज्य समर्थित बीमा की पेशकश करने के लिए आगे आई।

दिसंबर 2010 में, अमेरिकी दबाव में भारतीय रिजर्व बैंक ने एशियाई समाशोधन संघ (एसीयू) मुद्रा स्वैप तंत्र को बंद कर दिया। इस कदम के परिणामस्वरूप भारतीय तेल कंपनियों द्वारा ईरान को पहले से खरीदे गए कच्चे तेल के लिए लगभग 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर का भुगतान किया जाना था। अंतत: ईरान ने चेतावनी दी कि यदि भुगतान नहीं किया गया तो वह भारत के साथ सभी अनुबंध रद्द कर देगा। फरवरी 2011 में भारत ने इस पैसे का लगभग दो-तिहाई हिस्सा जर्मन स्थित Europaisch ईरानीश हैंडल्सबैंक के माध्यम से भुगतान किया। बाद में, इस बैंक ने भी भारत से भुगतान प्राप्त करना बंद कर दिया। Europaisch ईरानीश हैंडल्सबैंक को तब तुर्की हल्कबैंक द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था जिसने इस संबंध में भारत की मदद करने से इनकार कर दिया था। एक बार फिर, अमेरिकी दबाव ने भारत को 2012 में ईरान से अपने तेल आयात को 11 प्रतिशत कम करने के लिए मजबूर किया। यह निर्णय अमेरिकी विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन द्वारा ईरान के साथ अपने संबंधों को कम करने के लिए भारत पर दबाव डालने के एक सप्ताह बाद लिया गया था। अगले वर्ष भारत ने घोषणा की कि वह सालाना आधार पर ईरान से तेल आयात में 15 प्रतिशत की कमी करेगा।

2.0 मोदी सरकार के तहत भारत-ईरान संबंध

अपने चुनाव अभियान के दौरान और 2014 में हुए 16वीं लोकसभा चुनावों के बाद सत्ता संभालने के बाद, प्रधान मंत्री मोदी ने घोषणा की कि उनकी सरकार पड़ोस पर अधिक ध्यान केंद्रित करेगी। 22 मई 2016 को, वह ईरान की दो दिवसीय यात्रा पर गए। यह वह समय भी था जब भारत अपनी "लुक वेस्ट" नीति के हिस्से के रूप में ईरान के साथ अपने संबंधों को पुनर्जीवित करना चाह रहा था। यह यात्रा महत्वपूर्ण थी क्योंकि यह पन्द्रह वर्षों में किसी भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा ईरान की पहली यात्रा थी। अंतिम यात्रा 2001 में पूर्व प्रधान

मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा की गई थी। सद्भावना बनाने के लिए, उनकी यात्रा से पहले, भारत सरकार ने ईरान के भुगतान में 700 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का भुगतान किया।

3.0 ईरानी और अफगान राष्ट्रपतियों के बीच परिवहन और ट्रांजिट कॉरिडोर समझौता।

चाबहार से संबंधित समझौते के अनुसार, इंडिया पोर्ट्स ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड और ईरान के आर्य बैंडर के बीच अनुबंध 10 वर्षों के लिए कार्गो हैंडलिंग क्षमता वाले दो टर्मिनलों और पांच बर्थ को विकसित और संचालित करना चाहता है। चाबहार बंदरगाह के लिए 150 मिलियन अमेरिकी डॉलर के ऋण के लिए एक्ज़िम बैंक और ईरान के बंदरगाहों और समुद्री संगठन के बीच एक और समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। भारत की इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड और ईरान की कंस्ट्रक्शन, डेवलपमेंट ऑफ ट्रांसपोर्ट एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनी के बीच एक अन्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे बाद में इरकॉन को 500 किमी लंबी चाबहार-ज़ाहेदान रेलवे लाइन के निर्माण के लिए अपनी सेवाएं प्रदान करने में मदद मिलेगी। मोदी की यात्रा अप्रैल 2016 में भारतीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री की यात्रा से पहले हुई थी। अपने विचार-विमर्श के दौरान, भारत और ईरान दोनों ने विश्वास व्यक्त किया कि वे फरज़ाद-बी गैस क्षेत्र के संबंध में एक समझौते को समाप्त करने में सक्षम होंगे। प्राथमिकता के आधार पर। दोनों पक्ष इस बात पर भी सहमत हुए कि चाबहार विशेष आर्थिक क्षेत्र में पेट्रोकेमिकल और उर्वरक संयंत्र स्थापित करने के लिए भारतीय कंपनियां लगभग 20 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश करेंगी। ये उच्च-स्तरीय यात्राएँ ईरान के साथ अपने संबंधों को पुनर्जीवित करने में भारत की रुचि का एक स्पष्ट संकेत थीं लेकिन कुछ बाधाएँ सामने आईं। हालांकि ओबामा प्रशासन ने जनवरी 2016 में ईरान पर से प्रतिबंध हटा लिया था, लेकिन ईरान के साथ भारत के सुधरे हुए रिश्ते अभी भी अमेरिका के लिए चिंता का विषय हैं।

3.1 सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच संपर्क बढ़ाना

सांस्कृतिक संबंधों को और आगे बढ़ाने और दोनों देशों के बीच लोगों के बीच संपर्क बढ़ाने के लिए, विदेश मंत्री की यात्रा के दौरान तेहरान में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र का उद्घाटन किया गया। भारत में एक भी संस्कृति केंद्र नहीं था जबकि ईरान के भारत में कई संस्कृति केंद्र थे। इसलिए, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में केंद्र का खुलना महत्वपूर्ण है। लोगों से लोगों के बीच संपर्क बढ़ाने के लिए दोनों पक्षों ने अपनी वीजा व्यवस्था को उदार बनाने की जरूरत महसूस की। इस यात्रा के दौरान, निम्नलिखित तीन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए:

1. इंस्टीट्यूट ऑफ स्टैंडर्ड एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च ऑफ द इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान (ISISI) और भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) के बीच समझौता ज्ञापन।
2. विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय, भारत और स्कूल ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस, विदेश मंत्रालय, ईरान के बीच समझौता ज्ञापन।
3. जल संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य की सरकार और इस्लामी गणराज्य ईरान की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन।

2005 में IAEA में ईरान के खिलाफ भारत के वोट के बाद से ईरान का विवादास्पद परमाणु कार्यक्रम भारत के साथ एक संवेदनशील मुद्दा रहा है। ईरानी धारणा यह रही है कि अपने ऐतिहासिक संबंधों और गुटनिरपेक्ष आंदोलन के संस्थापक सदस्य के रूप में भारत को अधिक संवेदनशील होना चाहिए था। ईरान की ओर और पश्चिमी रेखा का पालन नहीं किया है। इस मुद्दे पर भारत की स्थिति बहुत स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई है। इस बात पर जोर दिया गया है कि परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) की सदस्यता के कारण अपने दायित्वों को पूरा करते हुए ईरान के पास परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग का अधिकार है। भारत ने सभी पक्षों से चर्चा और बातचीत के माध्यम से कूटनीतिक रूप से इस मुद्दे को हल करने का आग्रह किया है। विदेश मंत्री की हाल की यात्रा के दौरान, ईरानी ने अपने परमाणु कार्यक्रम के बारे में जानकारी साझा की और P5+1 के साथ वार्ता की बहाली के बारे में सूचित किया, जो इस वर्ष शुरू होने की संभावना है।

4.0 भारत-ईरान संबंधों पर तीसरे पक्ष का प्रभाव

अमेरिका ने 2015 में ईरान और अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, चीन और यूरोपीय संघ के बीच हस्ताक्षरित संयुक्त व्यापक कार्य योजना (JCPOA) से हटने की घोषणा की।38 राष्ट्रपति ट्रम्प का विचार था

कि समझौता ईरान के मिसाइल कार्यक्रम को संबोधित करने में विफल रहा। और अमेरिका और उसके सहयोगियों के राष्ट्रीय सुरक्षा हितों की रक्षा नहीं करना। परिणामस्वरूप, अमेरिका ने 7 अगस्त, 2018 को ईरान पर प्रतिबंधों का पहला सेट लगाया, उसके बाद 5 नवंबर, 2018 को प्रतिबंधों का एक और सेट लगाया। यह उम्मीद की गई थी कि अन्य देश ईरान से कच्चे तेल के अपने आयात को रोक देंगे। या दंडात्मक कार्रवाई की अपेक्षा करें। इसने भारत जैसे देशों के लिए एक अनिश्चित स्थिति प्रस्तुत की जो उस समय ईरानी तेल के प्रमुख आयातकों में से एक था।

ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंधों से छूट पाने की उम्मीद में भारत ने ईरान से अपने तेल आयात को कम कर दिया। नई दिल्ली ने अमेरिका को स्पष्ट कर दिया कि उसकी भारी ऊर्जा जरूरतों के कारण; नवंबर तक ईरान से तेल आयात शून्य पर लाना संभव नहीं था। अमेरिका अपनी ओर से भारत को वैकल्पिक ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करता रहा ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। अंततः, भारत को कुछ अन्य देशों के साथ मार्च 2019 तक एक महीने में 1.25 मिलियन टन तेल आयात करने की छूट दी गई थी। भारत को चाबहार बंदरगाह पर अपना परिचालन शुरू करने के लिए भी छूट दी गई थी।

ईरानी तेल आयात करने के लिए कुछ और समय मांगने के लिए भारतीय विदेश मंत्रियों के अपने अमेरिकी समकक्ष को फोन करने पर अब तक विचार नहीं किया गया है। दिलचस्प बात यह है कि मामले को बदतर बनाने के लिए, तालिबान के लिए ईरान का हालिया समर्थन - हालांकि दायरे4 में सीमित है - निश्चित रूप से भारत के लिए बड़ी चिंता का विषय होगा। इसके अलावा, फरज़ाद-बी गैस क्षेत्र पर मतभेद भी भारत-ईरान संबंधों की नाजुकता को उजागर करते हैं, हालांकि यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि इस संबंध की जड़ें इतिहास में हैं। इसलिए, एक ओर भारत को अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं और क्षेत्रीय सामरिक हितों के लिए ईरान की आवश्यकता है और दूसरी ओर, अमेरिका भारत का मुख्य रणनीतिक साझेदार है। इस प्रकार, एक अंतरराष्ट्रीय मामलों के विश्लेषक, अनीता इंदर सिंह के शब्दों में, भारत अतीत में रहा है और सबसे अधिक संभावना है कि "सख्ती पर रहेगा।"

5.0 रूस-यूक्रेन युद्ध प्रभाव

रूस-यूक्रेन युद्ध की पृष्ठभूमि के खिलाफ, भारत ने नई दिल्ली के रूप में अमेरिकी चेतावनियों के बावजूद मास्को के साथ अपने ऊर्जा संबंधों को जारी रखने का फैसला किया। ऐसा करते हुए, भारत ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंधों का पालन करने की गलती को दोहराने से बचना चाहता था जबकि चीन ईरान से अपने तेल आयात को बढ़ाकर आर्थिक रूप से लाभान्वित होता रहा। इससे पहले, ईरान ने भारत की ऊर्जा टोकरी में महत्वपूर्ण रूप से छापा था, क्योंकि ईरानी तेल भारत के कुल तेल सेवन का लगभग 11 प्रतिशत था। परमाणु समझौते से बाहर निकलने के अमेरिकी फैसले के बाद 2019 में ट्रम्प प्रशासन के दबाव में भारत सरकार ने ईरान से तेल आयात बंद कर दिया।

सीमाओं और चुनौतियों के बावजूद, वर्तमान संदर्भ में, नई दिल्ली और तेहरान के व्यापार और कनेक्टिविटी में समान हित हैं। शंघाई सहयोग संगठन में ईरान की पूर्ण सदस्यता, जहाँ भारत भी एक सदस्य है, चाबहार बंदरगाह जैसी कनेक्टिविटी परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए आपसी प्रयासों को बल दे सकता है, जो अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर (INSTC) से जुड़ता है।

भारत और ईरान भी द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाने के लिए भुगतान के अपने चैनलों में विविधता लाने की कोशिश कर रहे हैं। हाल की रिपोर्टों के अनुसार, भारत और ईरान के बीच द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि हुई है; जनवरी-जुलाई 2022 के दौरान भारत में ईरान का निर्यात 361 मिलियन डॉलर था, जबकि 2021 में इसी अवधि के दौरान यह 267 मिलियन डॉलर था। भारत के निर्यात में भी 2022 के पहले सात महीनों के दौरान 54 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई।

चूंकि ईरानी अर्थव्यवस्था अपने तेल राजस्व पर अत्यधिक निर्भर है, प्रतिबंधों के दीर्घ प्रभाव तेहरान की आर्थिक संभावनाओं को सीमित करना जारी रखेंगे, विशेष रूप से हाल ही में ईरान के प्रमुख ऊर्जा ग्राहकों जैसे कि चीनी चायदानी रिफाइनर ने भी सस्ते तेल के लिए रूस का रुख किया। इसके अलावा, ईरान को अब अधिक पश्चिमी प्रतिबंधों का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि ईरानी शासन घरेलू विरोधों के जवाब में तेजी से मुखर और हिंसक हो गया है। बिडेन प्रशासन किसी भी संभावित परमाणु सौदे के तहत प्रतिबंधों से

राहत की सीमा को लेकर पहले से ही द्विदलीय विरोध का सामना कर रहा है। इसलिए, भारत और ईरान के बीच तेल व्यापार के फिर से शुरू होने की संभावना काफी हद तक परमाणु वार्ता के परिणामों पर निर्भर करेगी।

6.0 निष्कर्ष

वर्तमान समय में, दुनिया भर में लड़े जाने वाले अधिकांश युद्धों में ऊर्जा संसाधन शामिल हैं। यह तथ्य सिद्ध करता है कि वर्तमान समय में देशों के लिए ऊर्जा सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण विचार है। यह भारत के बारे में भी सच है, जो एक आर्थिक और राजनीतिक वैश्विक शक्ति बनने की आकांक्षा रखता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, भारत सरकार को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि देश के पास ऊर्जा के पर्याप्त विश्वसनीय स्रोत हों - पारंपरिक और अपरंपरागत दोनों। आईपीआई गैस पाइपलाइन जैसी क्षेत्र में शांति लाने वाली परियोजनाएं, दुर्भाग्य से, अमेरिकी दबाव के कारण कभी भी साकार नहीं हो सकीं। ट्रंप प्रशासन द्वारा ईरान पर शिकंजा कसने से भारत एक बार फिर खुद को मुश्किल स्थिति में पा रहा है। जबकि भारत एक उभरती हुई शक्ति के रूप में पहचाने जाने की इच्छा रखता है, शायद यही वह समय है जब भारत अमेरिकी दबाव से स्वतंत्र होकर निर्णय लेना शुरू करता है। इससे क्षेत्र में शांति और सुरक्षा लाने में भी मदद मिल सकती है।

7.0 References

1. “Exploring Alternative Oil Supplies So ‘Our Friend’ India isn’t Affected, US official on Iran Sanctions,” Hindustan Times, 2021
2. “India in Middle of Polls, Let Iran Oil Imports Continue: Sushma Swaraj to Pompeo,” Hindustan Times, 30 April, 2019
3. “India Wants US Sanctions Waiver after Cutting Iran Oil Imports: Officials,” Reuters, October 8, 2018
4. “Iranian Leader Backs Palestine, Kashmir Struggle,” Hindu, 2022
5. http://www.thehindu.com/news/international/iranian-leader-backs-palestinekashmir-struggle/article19153869.ece 38 “Iran Deal: Trump Breaks With European Allies Over ‘horrible, one sided’ Nuclear Agreement,” Guardian
6. https://economictimes.indiatimes.com/news/defence/5-reasons-why-israel-mattersto-india/articleshow/59438739.cms
7. https://thediplomat.com/2018/11/managedinstability-iran-the-taliban-and-afghanistan/ 48 “India to Offer Tehran $4bn for Farzad-B Gas Field Development,” Dawn, April 5, 2018
8. https://www.dawn.com/news/1399662 49 Anita Inder Singh, “Walking the Tightrope,” Hindu, November 30, 2021, https://www.thehindu.com/opinion/op-ed/walking-the-tightrope/article25626030.ece
9. https://www.hindustantimes.com/indianews/sushma-swaraj-speaks-to-us-on-iran-oil-issue/storyJaLgSuMcnB3hB4SRwRWKAL.html
10. https://www.reuters.com/article/us-india-oil/india-wantsus-sanctions-waiver-after-cutting-iran-oil-imports-officials-idUSKCN1MI1GA
11. https://www.thehindubusinessline.com/economy/logistics/with-us-sanctions-waiverchabahar-port-set-to-commence-operations-by-month-end/article25438869.ece
12. Samuel Ramani, “Managed Instability: Iran, the Taliban and Afghanistan,” Diplomat, November 14, 2018